ISSN : 2583-2948

लघुकथा

एकता

महेशचंद्र चौरसिया
रोहिणी हाउस 12, निकट यूको बैंक, हवेली खड़गपुर
मुंगेर, 811213,बिहार

बरगद के पेड़ पर चार बड़े मधुमक्खी के छत्ते देख कनुआ ने अनुमान लगाया कि इसमें कम से कम दस किलो मधु निकलेंगे।

‘ ‘शुद्ध दस किलो।'

कनुआ के मुँह से लार टपक गया। उसने अपने दो साथियों को और बुलाया। अब समस्या यह थी, मधुमक्खियों को भगाया कैसे जाय। इसलिए तीनों साथियों ने रद्दी टायरों को पेड़ के नीचे जलाकर उसमें आग लगा दी। संयोगवश पछिया हवा जोरों से चल रही थी। धुआँ छत्ते को छू नहीं पा रहा था। आस पास प्रदूषण भर गया। मधुमक्खियाँ हँस पड़ी और बोलीं--

'रे मुर्ख मानव! मुझे भगाने के लिए तू अपने ही लोगों की जान लेने पर तुला है। ही... ही... ही...!'

सुनकर कनुआ और उनके साथियों ने छत्ते में ढेला मारना शुरूकर दिया।

यह देख मधुक्खियों में आतंक छा गया। चारों छत्ते की मधुमक्खियों में मनमुटाव चल रहा था परंतु, सबकी जान खतरे में देख सभी छत्ते की कुछ साहसी मधुमक्खियाँ कनुआ और उसके साथियों पर टूट पडीं। तीनों मित्र जान लेकर भागे।

वापस आकर मक्खियां कह रहीं थीं--'भाग गये स्साले..... कायर।'